पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

'समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम'

(लेख प्रतियोगिता)

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

समाज
विकास
शिक्षा
पर्यावरण
युवा
मूल्य
राजनीति
महिला
संस्कृति
समाधान

समाज
साहित्य
संस्कृति
विकास
नई पीढ़ी
बेहतर कल

विचारों की
स्याही से
बदलता समाज...

रचनाकार :-
अन्जु सिंगड़ोदिया

आयोजक:-
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी (म.प्र.)

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं। प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उतरदायी हैं। रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना हैं।

हिन्दी
से ही है
पहचान...

विचार...
संवाद...
समाज...
और एक बैहतर कल...

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका - अन्जु सिंगड़ोदिया

वर्तमान में सबसे बड़ी और विकराल समस्या लापता बच्चों की हैं।

वर्तमान मेंसबसे बड़ी और विकराल समस्या लापता बच्चों की हैं।

दुनिया में 12 लाख बच्चों की हर वर्ष खरीद-फरोख होती हैं। जिनमें एक बड़ी संख्या भारतीय बच्चों की होती है। पूरे देश से सालाना तकरीबन 44 -55 हजार बच्चें गायब होते हैं ,लेकिन बड़ी अफ़सोस की बात है कि गायब होने वाले बच्चों में से 11 हजार के तकरीबन बच्चें कहां चले जाते हैं ? पता नहीं चलता ! जाहिर सी बात है वे अपराधिक गिरोह के हत्थे हैं ढेरों तरह की यातना ,यंत्रणा ,दुर्व्यवहार ,शोषण ,उत्पीड़न ,भुखमरी झेलना उनकी नियति बन चुकी हैं। फिर वे उस चक्रव्यूह से जीवनपर्यन्त निकल नहीं पाते हैं।

देश की राजधानी दिल्ली से ,लापता होने वाले बच्चों के मामले में शीर्ष पर है। हर दिन औसतन 16 -18 बच्चें गायब हो रहें हैं यानी हर माह 500 ,साल में 6-8 हजार तो गौर करें कि पिछले 3 साल में दिल्ली से लगभग 18000 से हजार से ज्यादा बच्चें लापता हुए हैं। असलियत यह है कि कोई ही दिन ऐसा जाता होगा जबकि कोई बच्चा लापता न होता हो। .पुलिसवाले भले ही दावा कुछ भी करें लेकिन हकीकत तो यही है कि वह इसे रोक पाने में पूरी तरह से नाकाम रही हैं।

ये समझ में नहीं आता कि आजादी के 78 साल बाद भी हमारा कानून इतना विश्वसनीय और ठोस क्यों नहीं हैं ? पुलिस प्रशासन की नींद तभी टूटती हे जब कोई अमीर का बच्चा गुम हो गया हो या उन पर दबाब ऊपर से आता हो। नहीं तो पुलिस ऐसे मामलों को प्राथमिकता नहीं देती ,बल्कि संवेदनहीन होकर पूछेगी कि -'लड़की के गुम होने के पीछे किसी लड़के का तो चक्कर नहीं है ?..अगर लड़का नहीं मिला तो बोलेंगे -'तुम लोग मारते होंगे इसलिए भाग गया होगा। 'इसलिए गरीब आदमी पुलिस के पास जाने से पहले हजार बार सोचता है।

घर से बिछुड़े बच्चें अधिकतर कभी भी दोबारा अपने परिजनों से नहीं मिल पाते। वे मानव तस्करी या वेश्यावृत्ति जैसे कुकर्मों में धकेल दिए जाते हैं या फिर अंग निकाल लेना ,चेहरा -शरीर विकृत करके भीख मंगवाना आदि नीच कार्यों को वे पशु रूपी इंसान इन बच्चों से करवाते हैं।

बच्चों के लापता होने के मामले में दिल्ली के आकड़ें डरा रहे हैं दिल्ली पुलिस के आकड़ों पिछले 10 साल में राष्ट्रीय राजधानी से 1. 8 लाख अधिक बच्चें लापता हुए हैं। इनमे से 50000 से अधिक बच्चों का अभी तक पता चल पाया।

एक गैर सरकारी संस्था 'क्राई 'की रिपोर्ट के अनुसार 2025 में दिल्ली से पहले 10 महीने में 14828 बच्चे गायब हुए ,उनमे से अब तक 7443 बच्चों को ढूंढ निकाला गया हैं का पता लगा लिया गया हैं लेकिन 7385 लगभग 50 % अभी भी लापता हैं जिनमें लड़कियों की संख्याज्यादा हैं यानी 48 % हैं और उन बच्चों का आज तक पता नहीं चला। इस दौरान बाल तस्करी के 17 मामले दर्ज किये गए हैं।

मध्य्प्रदेश से 2018 से 2025 के बीच में 57253 बच्चे गायब हो गए ,जिसमें 5350 बच्चों का आज तक पता नहीं चला।राजस्थान में पिछले 1 साल में 7339 बच्चें लापता हो गए इनमें 501 बच्चों का अभी तक सुराग नहीं मिला। उन गायब बच्चों में 451 लड़कियां थीं जिनका कोई अता -पता नहीं हैं।

ये सारे आंकड़े दिल दहला देने वाले हैं। पुलिस और प्रशासन किंकर्तव्यविमूढ़ हैं। 2 से 4 साल के बच्चों को तो स्मगलिंग में व्यस्त कर देते हैं इन पर कोई शक भी नहीं करता। आज कम उम्र अर्थात 14 साल वर्ष की कम उम्र की बच्चियों की मांग बाजार में सबसे ज्यादा हैं। यही एकमात्र वजह रही है कि बीते सालों में 12 से लेकर 14 -17 वर्ष की लापता लड़कियों की तादाद बढ़ रही हैं। वही 12 साल से कम उम्र के लड़कों की संख्या भी ज्यादा हैं। सबसे बड़ा कारण बाल-वेश्यावृति है। दिल्ली से सटे शहरों व जिलों खासकर नोएडा की हालत तो बद से बदतर है। इन इलाकों में बच्चे और भी असुरक्षित हैं। देश में बाल -वेश्यावृति का ग्राफ तेजी से बढ़ रहा हैं। लापता बच्चों की बढ़ती तादाद हमारे देश की नहीं बल्कि दुनिया की समस्या बन चुकी हैं। बेचारे माँ-बाप से बिछुड़कर कितने परेशान होते होंगे ,यही दर्द दिल में लेकर लिखने बैठी हूं। सुबह 4 . 30 रास्ते में पड़ने वाले ढ़ाबे के बच्चों (10 -12)को उठा दिया जाता हैं क्योंकि 7. 30 बजे गर्म-गर्म जलेबी ,कचौड़ी और समोसा ,चाट बिकती हैं। मॉर्निंग वॉक जाते हुए देखती हूं कि उन बच्चों पर जबरदस्ती पानी डालकर नींद से उठा दिया जाता हैं। छोटे-छोटे मासूम बच्चे अपनी नन्हीं -नन्हीं हथेलियों से अपनी नींद से भरी उनींदी आंखें रोते-रोते मलते हैं तो कलेजा मुंह को आ जाता है। दिल भर आता है कि यह उम्र उनके स्कूल जाने की हैं और ये झाड़ू लगा रहें हैं ,पानी भर रहे हैं ,चूल्हा जला रहे हैं ,चाय बना रहे हैं बर्तन मांज रहें हैं। उन रोती बिसूरती आंखों में कितना दर्द और बेचारगी समाई हैं। इस पीड़ा को ,सीने में दिल रखने वाला ही समझ सकता है। काश ऐसा किसी के साथ न हो !...

बहुत ही सामयिक ,मार्मिक और गंभीर मुद्दा है। कुछ बच्चें भाग्यशाली होते हैं जो वापस आ जाते हैं ,ज्यादातर बच्चें कभी भी अपने घर लौटकर नहीं आ पाते ! उनके माँ--बाप तड़पते रहते हैं और इनको चुरानेवाला ,दूसरों को हजारों रुपयों में बेच देता है या घरेलू नौकर बनाकर चाय-दुकानों ,छोटे-छोटे होटलों में लगाकर उनके पैसों पे ऐश करता है। यह सब देखकर मन दुखी और त्रस्त हो जाता है। कौन जिम्मेदार हैं इन सबके लिए ? . समाज ,समाज में रहने वाले हम सब ? प्रशासन ? जो ,कोई भी व्यवस्थित व्यवस्था करने में अक्षम हैं या वो लोग जो इन कार्यों में पशुवत लिप्त हैं। उनपर कोई अंकुश क्यों नहीं लगा पा रहा ?.. हमारी बनती है कि हम इस दिशा में कुछ कारगर सोचें व करें। बच्चा चोरों को कठोर कारावास के साथ भारी अर्थदंड का भी प्रावधान होना चाहिए। केवल लिखकर ही जागरूकता नहीं फैलानी हैं बल्कि किसी बच्चे पर जुल्म हो रहा है तो चुप न रहें ,क्योंकि आपकी आवाज किसी बेजुबान को आजादी दिला सकती है। सिर्फ कहने से नहीं होगा कि 'बच्चे देश के भविष्य हैं '-हमारी सरकार को वर्तमान की फ़िक्र ही नहीं तो भविष्य किस मुंह से बचायेगी ?.. देश को चलाने वाली सरकार चेते ! अपह्नत हो रहें बच्चों की ओर संवेदित होकर सोचे कि बच्चें आखिर इतने जाते कहाँ हैं ?. इसके लिए अल व्यापक अभियान चलाये। जहां भी बच्चे मिलें उनके माँ-बाप का 'वेरिफिकेशन 'करें ,इससे कुछ माँ-बाप के जिगर के टुकड़े फिर से उन्हें मिलेंगे तथा नन्हें मासूमों को भी नारकीय जीवन से मुक्ति मिलेगी।

- अन्जु सिंगड़ोदिया

लेखक परिचय

नाम – अन्जु सिंगड़ोदिया
ग्राम - कोलकाता

अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुद्देशीय संस्था

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ.....**अन्जु सिंगड़ोदिया**.....जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "**एक लेख प्रतियोगिता**" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों को** प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिंदी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना
समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन एवं संस्था
डॉ. प्रीति समकित सुराना

शब्द से संवेदन तक... लेखन से परिवर्तन तक...